ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय- हिन्दी

दिनांक—09/09/2020 कृतिका(रीढ़ की हड्डी)

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

रीढ़ की हड्डी

--जगदीश चन्द्र माथुर

(सन् 1917-1978)

‘रीढ़ की हड्डी’एकांकी के शीर्षक की सार्थकता-

एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' का शीर्षक एक प्रतीकात्मक, व्यंग्यात्मक शीर्षक है| जो इस कहानी की भावना को तथा समाज की सड़ी- गली और दोहरी मानसिकता को सही तरीके से व्यक्त करने वाला है, उस पर प्रहार करता है। समाज में हो रही लड़कियों की उपेक्षा तथा नारी शिक्षा का महत्व और आवश्यकता को जोड़ दिया है| शंकर जैसे लोग नव युवा होते हुए भी शिक्षा का विरोधी होने के कारण समाज को कमजोर करते हैं | ऐसे नव युवा जिसका कोई व्यक्तित्व नहीं विचार शक्ति नहीं है, चरित्रहीन है, परजीवी है और सारी उम्र दूसरों के इशारों पर चलते हैं| शंकर अगर समझदार होता तो गोपाल प्रसाद की हिम्मत नहीं होती लेकिन वह भी अशिक्षित की तरह अक्षमता बताता है| जिस प्रकार शरीर में रीढ़ की हड्डी के बगैर शरीर का बैठ पाना बेकार होता है आज समाज में शंकर और गोपाल प्रसाद जैसे लोगों का बोलबाला हो गया है जिसकी वजह से ऐसे समाज को भी बिना रीढ़ की हड्डी वाला समाज कहा जा सकता है| यह एकांकी शांति और जिज्ञासा को व्यक्त करती है|

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”